International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 13-10-2020; Accepted: 20-11-2020; Published: 25-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 38-39

उषाकिरण खान : कहानियों में वर्णित समाज

शम्भू पासवान
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

सारांश
उषाकिरण खान की कहानियों में वर्णित समाज को समझने के लिए पहले समाज की अवधारणा को जानना आवश्यक है। हम सभी जानते हैं कि समाज एक से अधिक लोगों के समुदाय से मिलकर बना एक वृहद समूह है, जिसमें सभी व्यक्ति मानवीय क्रियाकलाप करते हैं, जिसमें मानवीय आचरण, सामाजिक सुरक्षा और निर्वाह आदि की क्रियाएँ सम्मिलित होती है। समाज लोगों का ऐसा समूह होता है जो अपने अंदर के लोगों के मुकाबले अन्य समूहों से काफी कम मेलजोल रखता है। मनुष्य एक सामाजिक सामाजिक प्राणी है। अरस्तू ने कहा। समाज के बिना मनुष्य के जीवन का कोई महत्व नहीं है। व्यक्ति जो कुछ भी बनना चाहता है, वह समाज के वातावरण में ही बन सकता है।
समाज एक प्राकृतिक संस्था है, जिस पर व्यक्ति का अस्तित्त्व और विकास निर्भर करता है। यदि यह कहा जाय कि समाज मानव–जाति की सुरक्षा और विकास का मूल आधार है, तो यह कोई अतिश्योक्ति नहीं होगा। यह मानव जाति की सर्वश्रेष्ठ संस्था है। संस्था की परिभाषाओं और विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण दिया जा सकता है। आम तौर पर सामाजिक शब्द का उपयोग ठीक से नहीं किया जाता है। कई बार हम किसी समुदाय या संघ के लिए समाज शब्द का उपयोग करने में संकोच नहीं करते हैं।

मूल शब्द: उषाकिरण खान, समाज, मानवीय आचरण, सामाजिक सुरक्षा

प्रस्तावना
उषा जी की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ की झाँकी देखी जा सकती है। वे ग्रामीण जीवन के ऐसे सजग कलाकार हैं, जिन्होंने उसमें निहित मानवीय संघर्ष उसकी वैचारगी को बहुत ही आत्मीय ढ़ंग से देखने का प्रयास किया है, जिसका साक्ष्य हमें उनके कथा–साहित्य में देखने को मिलता है। वे गाँवों के दर्द, बेचैनी, और संघर्ष की साक्षी रहीं हैं। कहानियों में ग्रामीण समाज का यथार्थ हम देख सकते हैं।
'दूब–धान' सबसे चर्चित कहानियों में एक है। कहानी के पात्र केतकी के सहारे लेखिका ग्रामीण स्मृतियों रचे–बसे दिल को टटोलती है। जहाँ एक ओर सामूहिक जीवन–दर्शन के प्रति आस्था है, वहीं दूसरी ओर गाँव की माटी की सौधी खुशबू के प्रति लगाव का रेखांकन। यह कहानी घर के भीतर घर की खोज है। 'मौसम का दर्द' कहानी में नायिका को स्वाभाविक जीवन एवं वर्ग संघर्ष, पठनीयता और स्मरणीयता का समावेश हुआ है। इस कहानी में लोकजीवन और आँचलिकता बड़े ही सहज भाव से पुष्पित–पल्लवित हुई हैं। कई पात्र ऐसे भी हैं जो संघर्ष करते नजर आते हैं। ग्रामीण–क्षेत्र में रहने वाले हर वर्ग के लोग अपने से नीचे रहने वाले को ढूँढ़ ही लेते हैं, क्योंकि वे अपना वर्चस्व बनाए रखना चाहते हैं। समाज में दोनों तरह के वर्ग हमेशा अपनी ताकत एक–दूसरे पर झोंक देते हैं। ''आधुनिक मध्यवर्गीय समाज में सभी स्तरों पर व्याप्त घोर अमानवीयता और मूल्यहीनता के इस दौर में मनुष्यता के प्रति अटूट आस्था ही उषाकिरण खान की विशिष्ट पहचान और शक्ति है।'' [1]
कहानी 'विषतंतु' में कहा गया है कि–''आधुनिक समाज तब तक इतना उदार न हो पाया था कि किसी स्त्री को उस हद तक स्वीकार करता।'' [2] 'विषतंतु' में समाज की संस्कृति की बात कही गई है। समाज की संस्कृति में वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित रहती हैं, जिन पर विचार करते हैं, कार्य करते हैं और समाज के सदस्य होने के नाते उन्हें, अपने पास रखते हैं। कहानी में जीता–जागता पात्र है सुलोचना जिसने आश्रम खोलने के बाद समाज को एक सही दिशाओं में लाना ही एक मात्र उद्देश्य नहीं था। उन्होंने पशु समाज का जिक्र करते हुए कहा है। ''पशु समाज में अवश्य रहते हैं, परंतु उन्हें सामाजिक बोध से कुछ भी लेना–देना नहीं रहता है। यानी इसका कोई ध्यान नहीं रहता है। सामाजिक चेतना उनमें बहुत कम रहती है।'' [3] कहानी में बाल–विवाह, बेमेल–विवाह समाज में अधिक प्रचलित थी। उस प्रथा को समाज से दूर रखने का एक मात्र साधन है शिक्षा। उषा शिक्षा की भी बात करती है।
'आकांक्षाओं के दीप' कहानी में गाँव–समाज के हर वर्ग का पर्व–त्योहारों का जिक्र किया है। खासकर घरेलू स्त्रियाँ ही ज्यादा रूची लेती है, और अपने पति एवं बच्चों की दुआ करती है। मिथिला इसका केन्द्र माना जाता है। मिथिला में कई तरह के पर्व त्योहारों को लेकर स्त्रियाँ व्यस्त रहती है। 'उमा–महेश' कहानी आज भी समाज का यथार्थ है। उमा के पति महेश शराबी है, रिक्शा चलाता है अपने पाँच बच्चों की देख–रेख करता है, आज भी पुरुषवादी समाज स्त्री को वस्तु और बच्चा पैदा करने वाला मशीन समझता है। स्त्री–विमर्श का मुख्य बिन्दु माना जा सकता है। पात्र (नायिका) उमा के गर्भ से बेटा पैदा लेती, तो वह पति महेश के द्वारा प्रताड़ित होती है। उमा रो–रो कर कहती– ''दीदी घर में सास कहती है तेरे बस में बेटा पैदा करना मुश्किल है।'' [4] यथार्थ है, लेखिका का कथन है–''स्त्रियों का सबसे बड़ा दुश्मन स्त्री ही होती है।'' [5] समाज में तिलक–दहेज वाली प्रथा को समाप्त करने में सबसे अहम् भूमिका स्त्री को ही दिया जाता है।
''समकालीन हिन्दी कहानी के क्षेत्र में कई पीढ़ियों के रचनाकार एक साथ सक्रिय हैं। ऐसा पहले भी रहा है, पर आज भी जितनी पीढ़ियाँ एक साथ सक्रिय है, उतना वैविध्य शायद पहले नहीं था। कृष्णा सोबती से लेखकर अखिलेश तक की रचनाशीलता के मद्देनजर पीढ़ी की दृष्टि से भी इस दौर को समृद्ध कहा जा सकता है।'' [6] जो समाजिक कहानियाँ हैं, उनमें अधिकांश का विषय असफल प्रेम है। यह विचित्र प्रतीत होता है कि उषा किरण खान की कहानियाँ नितांत भावुक कर देने वाली होती है, हमारी दृष्टि में उससे कहीं अधिक प्रभावकारी वह कहानी होगी, जो

आपके निकट का दृश्य दूसरों के लिए अधिक बना दे। समकालीन कहानिकार में उषाकिरण खान भी प्रमुखस्थान रखती है, प्रस्तावना–बिन्दु के तौर पर कुछ कहानियों को रेखांकित किया जा सकता है। इस दृष्टि से इब्राहिम शरीफ की कहानी 'जमीन का आखिरी टुकड़ा' मधुकर सिंह की 'दुशमन' और काशीनाथ सिंह की 'सदी का सबसे बड़ा आदमी' गौर तलब है। ढेर सारी समकालीन कहानीयों के बीच से कुछ कहानियों को उदाहरण के तौर पर चुनकर इन्हें नये दौर के प्रस्थान–बिन्दु के रूप में रेखांकित करने के पीछे तर्क यह है। कि समकालीन कहानी में यथार्थ की विजय दिखाई पड़ती है।

''समकालीन कहानियों में सामाजिक परिपेक्ष्य व सामाजिक संघर्षशीलता स्पष्ट दिखाई पड़ती है और वह कहीं से भी कहानी पर थोपी नहीं है बल्कि जीवन–प्रसंग व संदर्भों के चित्रण के माध्यम से स्वाभाविक रूप से विकसित मालूम पड़ती है।'' [7]

निष्कर्षतः स्वरूप हम कह सकते हैं कि उषाकिरण खान एक सामाजिक–पारिवारिक कथाकार हैं। इनकी कहानियों में परिवार का द्वंद और विलक्षण ढंग से अभिव्यक्त हुआ है भारतीय परिवार में स्त्रियों की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। दूसरी तरफ यही स्त्री परिवार में सर्वाधिक संघर्षशील होती हैं। समाज की चिंता, परिवार की चिंता और बच्चों की जितनी चिंता भारतीय स्त्रियों की होती है, कदाचित पुरुषों को नहीं। इसलिए उषाकिरण खान की कहानियों में स्त्री की शक्ति और सामर्थ्य की अद्भुत पड़ताल की गई है। इनकी कहानियों से गुजरने के बाद यह कहा जा सकता है कि उषाजी की यह मान्यता है कि अगर भारतीय समाज को वचना है, समाज को स्वस्थ और संवेदनशील बनाना है। हमें स्त्रियों को अधिक से अधिक शिक्षित और सक्षम बनाना होगा। इनकी कहानियों में भारतीय ग्रामीण समाज की शक्तिशाली स्त्रियों से हमारा साक्षात्कार होता है। कुल मिलाकर उषाकिरण खान भारतीय समाज की स्त्रियों अद्भुत व्याख्याकार कथाकार हैं।

सन्दर्भ सूची

1. उषा हिंडोला (उषाकिरण खान का रचना संसार) संपादक डॉ0 कुमार वरूण अमन, प्रकाशन, कानपुर (उ0प्र0) प्रथम संस्करण–2019 पृ0–50.
2. उषाकिरण खान की लोकप्रिय कहानियाँ उषाकिरण खान, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण–2015 पृ0–13.
3. 'मौसम का दर्द' उषाकिरण खान, संपादक–डॉ0 छबिल कुमार मेहेर, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 2015 पृ. –21.
4. उषाकिरण खान की लोकप्रिय कहानियाँ उषाकिरण खान, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण–2015 पृ.–17.
5. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्त्तन–एम–एन–श्री निवास–वाणी प्रकाशन दिल्ली–प्रथम संस्करण–2010–पृ.–17.
6. वही–पृ. सं.–175.
7. हिन्दी कहानी रचना और परिस्थिति–सुरेन्द्र चौधरी अंतिका प्रकाशन गाजियाबाद प्रथम संस्करण–2009, पृ.–20.